10. मन्दाकिनीवर्णनम् (मन्दाकिनी का वर्णन)

प्रस्तुतः पाठः वाल्मीकीयरामायणस्य अयोध्याकाण्डस्य पंचनवति (95) तमात् सर्गात् संकलितः। वनवासप्रसंगेः रामः सीतया लक्ष्मेणेन च सह चित्रकूटं प्राप्नोति।

प्रस्तुत पाठ वाल्मीकी रामायण के अयोध्या काण्ड के पंचानवें सर्ग से संकलित किया गया है। वनवास प्रसंग में राम-सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकुट पहुँचते हैं।

तत्रस्थितां मन्दाकिनीनदीं वर्णयन् सीतां सम्बोधयति। इयं नदी प्राकृतिकैरुपादानैः संवलिता चित्तंः हरति। अस्याः वर्णनं कालिदासो रघुवंशकाव्येऽपि (त्रयोदशसर्गे) करोति। अनुष्टुप्छनदसि महर्षिः वाल्मीकिः मन्दाकिनीवर्णने प्रकृतेः यथार्थं चित्रणं करोति।

यहाँ स्थित मन्दाकनी नदी का वर्णन करते हुए सीता को कहते हैं। यह नदी प्राकृतिक संपदाओं से घिरी होने के कारण मन को आकर्षित करती है। इसका वर्णन कालीदास ने रघुवंश काव्य में भी ;तेरहवें सर्ग में द्ध किये है। अनुष्टुप छन्द में महर्षि वाल्मीकी मन्दाकिनी वर्णन में प्रकृति का यथार्थ चित्रण करते हैं।

विचित्रपुलिनां रम्यां हंससारससेविताम्।
कुसुमैरुपसंपन्नां पश्य मन्दाकिनीं नदीम्।।1।।

हे सीते! फुलों से परिपुर्ण हंस-सारस से सेवित और रंग-विरंगी तटों वाली सुंदर मन्दाकनी नदी को देखों।

नानाविधैस्तीररुहैर्वृतां पुष्पफलद्रुमैः।
राजन्तीं राजराजस्य नलिनीमिव सर्वतः।।2।।

हे सीते! अनेक प्रकार के फल-फुलों के वृक्षों से घिरा हुआ किनारा राजाओं के सरोवर के समान सभी जगह प्रतीत हो रहा है।

मृगयूथनिपीतानि कलुषाम्भांसि साम्प्रतम्।
तीर्थानि रमणीयानि रतिं संजनयन्ति मे।।3।।

हे सीते! अभी हरिणों के समुह द्वारा पीए गए जल गंदे हो गये जो मन को मोहित करने वाले तीर्थों के प्रति मेरे मन को जगा रहे हैं। अर्थात् यहाँ की सुंदरता, पवित्रता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर मेरे मन में प्रेम रस का संचार करने लगे हैं।

जटाजिनधराः काले वल्कलोत्तरवाससः।

ऋषयस्त्ववगाहन्ते नदीं मन्दाकिनीं प्रिये।।4।।

हे प्रिय सीते! जटा और मृगचर्म धारण करने वाले और पेड़ की छाल को वस्त्ररूप में धारण करने वाले ऋषिगण तो इसी मंदाकनी नदी में स्नान करते हैं।

आदित्यमुपतिष्ठनते नियमादूर्ध्वबाहवः।

एते परे विशालाक्षि मुनयः संशितव्रताः।।5।।

हे विशाल नयन वाली सीते! ये श्रेष्ठ तथा प्रशंसनीय व्रत रखने वाले मुनीलोग अपनी बाँहों को ऊपर किये हुए सुर्य की उपासना में लगे हैं।

मारुतोद्धूतशिखरैः प्रनृत्त इव पर्वतः।

पादपैः पुष्पपत्राणि सृजद्भिरभितो नदीम्।।6।।

हे सीते! नदी के चारों ओर फुल एवं पत्तों से युक्त एवं हवा में चलायमान शिखर से पर्वत झुमते हुए जैसे लग रहे हैं।

क्वचिन्मणिनिकाशोदां क्वचित्पुलिनशालिनीम्।

क्वचित्सिद्धजनाकीर्णां पश्य मन्दाकिनीं नदीम्।।7।।

हे सीते! मणि जैसे निर्मल जलवाली मन्दाकनी को देखो-जिसकी कहीं तटें सजी-धजी हैं तो कहीं ऋषि-मुनियों से भरी हुई हैं।

निर्धूतान् वायुना पश्य वितितान् पुष्पसंचयान्।

पोप्लूयमानानपरान्पश्य त्वं जलमध्यगान्।।8।।

हे सीते! वायु द्वारा उड़ाये गये फुल समुहों को देखो और दुसरी तरफ जल के बीच में तैरते हुए फुलों के ढ़ेरों को देखो।

तांश्चातिवल्गुवचसो रथांगह्वयना द्विजाः।

अधिरोहन्ति कल्याणि निष्कूजन्तः शुभा गिरः।।9।।

हे कल्याणी! अत्यन्त मीठी वाणी वाला चकवा-चकई पक्षी को देखो जो मधुर आवाज से मन्दाकनी की शोभा को बढ़ा रहे हैं।

दर्शनं चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याश्च शोभने।

अधिकं पुरवासाच्च मन्ये तव च दर्शनात्।।10।।

हे शोभने! यहाँ चित्रकुट और मंदाकनी के दृश्यों का दर्शन जो हो रहा है। यह दृश्य तुम्हारे द्वारा किया गया अन्य दृश्यों के दर्शन से अधिक सुंदर माना जायेगा।

1.मंदाकिनी की शोभा का वर्णन किस रूप में किया गया है?

उत्तर ⇒ वनवास काल में जब राम सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट जाते हैं तब मंदाकिनी की प्राकृतिक सुषमा से प्रभावित हो जाते हैं। वे सीता से कहते हैं कि यह नदी प्राकृतिक उपादानों से संवलित चित्त को आकर्षित कर रही है। रंग-बिरंगी छटा वाली यह, हंसों द्वारा सुशोभित है। ऋषिगण इसके निर्मल जल में स्नान कर रहे हैं। ऊँची कछारों वाली यह नदी अत्यन्त रमणीय लगती है।

2. मंदाकिनी का वर्णन करने में 'राम' सीता को किन-किन रूपों में संबोधित करते हैं?

उत्तर ⇒ परमपावनी गंगा' अनायास मन को आकर्षित करनेवाली है। निर्मल जल, रंग-बिरंगी छटा, ऊँची कछारें आदि राम को आह्लादित करती रहती हैं। इसकी शोभा से वशीभूत 'राम' सीता को इसकी सुन्दरता का निरीक्षण करने के लिए अपने भाव प्रकट करते हैं; हे सीते । प्रिये । विशालाक्षि ! शोभने ! आदि संबोधन से संबोधित करते हैं।

3. मन्दाकिनी-वर्णनम् पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर ⇒ वाल्मीकीय रामायण के अयोध्याकाण्ड की सर्ग संख्या-95 से संकलित इस पाठ में चित्रकूट के निकट बहने वाली मन्दाकिनी नामक छोटी नदी का वर्णन है। इस पाठ में आदिकवि वाल्मीकि को काव्यशैली तथा वर्णनक्षमता अभिव्यक्त हुई है। श्री राम सीता को मन्दाकिनी का वर्णन सुनाते हैं ।

4. मंदाकिनीवर्णनम् से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर ⇒ मंदाकिनीवर्णनम् महर्षि वाल्मिकी-कृत रामायण के अयोध्याकांड के 95 सर्ग से संकलित है। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि प्रकृति हमारे चित्त को हर लेती है तथा इससे पर्यावरण सुरक्षित रहता है। प्रकृति की शुद्धता के प्रति हमें हमेशा ध्यान देना चाहिए।

5. मनुष्य को प्रकृति से क्यों लगाव रखना चाहिए?

उत्तर ⇒ प्रकृति ही मनुष्य को पालती है, अतएव प्रकृति को शुद्ध होना चाहिए। यहाँ महर्षि वाल्मीकि प्रकृति के यथार्थ रूप का वर्णन करके मनुष्य को लगाव रखने का संदेश देते हैं। इससे हमारा जीवन सुखमय एवं आनंदमय होगा ।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. किस छन्द में मन्दाकिनीवर्णनम् पाठ है?

(A) अलंकार

(B) अनुप्रास

(C) अनुष्टुप

(D) छन्द

Ans – (C)

2. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ के रचनाकार कौन हैं?

(A) वेदव्यास

(B) कालिदास

(C) वाल्मीकि

(D) माघ

Ans – (C)

3. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ रामायण के किस काण्ड से लिया गया है?

(A) बालकाण्ड

(B) लंकाकाण्ड

(C) अरण्यकाण्ड

(D) अयोध्याकाण्ड Ans – (D)

4. मंदाकिनी नदी किसके तालाब के समान दिखाई पड़ रहा है?

(A) इन्द्र

(B) विष्णु

(C) कुबेर

(D) शिव

Ans – (C)

5. मन्दाकिनी नदी किस पर्वत के निकट बहती है?

(A) मंदार

(B) हिमालय

(C) चित्रकुट

(D) राजगृह

Ans – (C)

6. मन्दाकिनी नदी का किसके पीने से गंदा हो गया है?

(A) खरगोश

(B) गाय

(C) मोर

(D) हरिण

Ans – (D)

7. 'रामायण' के रचनाकार कौन है?

(A) वाल्मीकि

(B) व्यास

(C) तुलसीदास

(D) कालिदास

Ans – (A)

8. कालिदास की कौन-सी रचना है?

(A) रामायण

(B) रघुवंशम्

(C) गीतगोविंद

(D) हर्षचरित

Ans – (B)

9. राम किसको मंदाकिनी नदी दिखा रहे हैं?

(A) राधा

(B) माता

(C) सीता

(D) लक्ष्मण

Ans – (C)

10. वनवास प्रसंग में राम सीता लक्ष्मण के साथ कहाँ पहुँचते हैं?

(A) विचित्रकूट

(B) स्वर्णकूट

(C) चित्रकूट

(D) पर्णकुट

Ans – (C)

11. राम किसे संबोधित करते हुए 'मंदाकिनी नदी का वर्णन करते हैं?

(A) सीता

(B) लक्ष्मण

(C) केवट

(D) वाल्मीकि

Ans – (A)

12. जटा और मृगचर्म कौन धारण किये हुए है?

(A) मुनि

(B) छात्र

(C) कालिदास

(D) शिक्षक

Ans – (A)

13. सीता रामचन्द्र के कौन थी?

(A) भगिनी

(B) माता

(C) पत्नी

(D) भ्राता

Ans – (C)

14. पक्षी का पर्यायवाची क्या होता है?

(A) रवि

(B) द्विज

(C) काक

(D) मृग

Ans – (B)

15. दोनों भुजाओं को ऊपर कर कौन उपासना करते हैं?

(A) देवता

(B) मुनि लोग

(C) सैनिक

(D) सीता

Ans – (B)

16. कौन नृत्य के समान प्रतीत हो रहा है?

(A) भक्त

(B) मुनि

(C) वृक्ष

(D) पर्वत

Ans – (D)

17. रंग-बिरंगे तटों वाली कौन नदी है?

(A) गंडक

(B) यमुना

(C) मंदाकिनी

(D) सरस्वती

Ans – (C)

18. हंस- सारस से युक्त कौन-सी नदी है।

(A) मंदाकिनी

(B) गंडक

(C) कोशी

(D) यमुना

Ans – (A)

19. जल के बीच में कौन तैर रहा है?

(A) मुनि

(B) फूल

(C) पता

(D) सारस /फूल

Ans – (D)

20. कौन-सी नदी प्राकृतिक सम्पदाओं से घिरी हुई है?

(A) मंदाकिनी

(B) यमुना

(C) सरस्वती

(D) काबेरी

Ans – (A)

21. 'रघुवंश' महाकाव्य के रचनाकार कौन हैं?

(A) वाल्मीकि

(B) कालिदास

(C) तुलसीदास

(D) व्यास

Ans – (B)

22. विशाल नेत्रों वाली कौन है?

(A) श्रीराम

(B) केवट

(C) सीता

(D) राधा

Ans – (C)

23. सुनिलोग किनकी उपासना करते हैं?

(A) शिव

(B) सूर्य

(C) राम

(D) राधा

Ans – (B)

24. कौन नदी को दोनों ओर से घेरे है?

(A) घरा

(B) नगर

(C) पर्वत

(D) वृक्ष

Ans – (C)

25. कौन सब नदी में स्नान करते हैं?

(A) भक्त

(B) दुर्जन

(C) सज्जन

(D) ऋषि

Ans – (D)

26. रामचन्द्र जी ने 'शोभन' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

(A) लक्ष्मण के लिए

(B) तपस्वियों के लिए

(C) गंगा के लिए

(D) सीताजी के लिए

Ans – (D)

27. जटाजिनधरा वल्कलीनरवाससः।'इस श्लोकांश के रिक्त स्थान में कौन-सा पद होगा?

(A) भाले

(B) बाले

(C) काले

(D) ताले

Ans – (C)

28. कालिदास ने किस नदी का वर्णन किया है?

(A) बूढ़ी गंगा

(B) मन्दाकिनी

(C) यमुना

(D) कावेरी

Ans – (B)

29. वाल्मीकि रामायण से कौन-सा पाठ संकलित है?

(A) विश्वशांतिः

(B) कर्णस्य दानवीरता

(C) नीतिश्लोकाः

(D) मन्दाकिनी वर्णनम्

Ans – (D)

30. 'मन्दाकिनी वर्णनम्' पाठ में किस नदी का वर्णन है?

(A) गङ्गा

(B) यमुना

(C) सरस्वती

(D) सरयु Ans – (A)

31. चित्रकूट स्थित गङ्गा का वर्णन किस पाठ में है?

(A) कर्णस्य दानवीरता

(B) व्याघ्रपथिक-कथा

(C) मन्दाकिनी वर्णनम्

(D) भारतमहिमा Ans – (C)

32. रमणीयानि तीर्थानि किं संजनयन्ति ? रमणीय तीर्थ क्या उत्पन्न कर रहे हैं?

(A) रति को

(B) गति को

(C) मति को

(D) भक्ति को Ans – (D)